देश की ग्लोबल ब्रैंडिंग का मौक़ा है कुंभ

विशेष गुप्ता

मकर संक्रांति पर्व से प्रयागराज में ऐतिहासिक महाकुंभ का आगाज होने जा रहा है। यह भारत ही नहीं, पूरे विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयोजन होगा। इस बार इसमें 40-45 करोड़ श्रद्धालुओं के जुटने की संभावना है।

मोक्ष का साधन | देश में संस्कृति की निरंतरता के लिए कई तरह के आयोजन और प्रयोजन होते रहे हैं। तीर्थयात्रा और मेले भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने व उसको विस्तार देने के ही उपक्रम हैं। हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार, पुरुषार्थ के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति मनुष्य की अंतिम इच्छा रही है। कुंभ का स्नान भी मोक्ष प्राप्ति का ही एक पवित्र साधन है।

एकता का सूत्र | कुंभ, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारतीय संस्कृति की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोता है। देश में आज विभिन्न धर्म और संस्कृतियों के बीच खुद को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ है। ऐसे समय में कुंभ जैसे आयोजन भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सहनशीलता को अपने अंदर समेटे हुए हैं।

पुण्य पाने का अवसर | कुंभ पर गंगा का स्नान महज स्नान नहीं, उस पवित्र नदी में डुबकी है जिससे इंसान पाप से पुण्य की ओर चल पड़ता है। ऐसी मान्यता है कि कुंभ के समय पृथ्वी पर अमृत उतरता है। इस अमृत को पाने की चाह में ही दुनियाभर से श्रद्धालु आकर्षित होते हैं कुंभ की ओर। कुंभ हमारी पुरातन भारतीय सभ्यता के बहुत बड़े स्तंभ हैं, जो धर्म और अध्यात्म के उत्कर्ष का मार्ग आलोकित करते हैं। ये भारत के ज्ञान का विस्तार हैं। यही कारण है कि विभिन्न मठ-अखाड़ों से जुड़े साधु-संत, संन्यासी मत वैभिन्नता को भुलाकर एक साथ जुटते हैं और शाही स्नान करते हैं।

बेमिसाल अनुशासन | दुनिया में ऐसा कोई भी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक संगठन नहीं है, जो 30-40 करोड़ लोगों को जुटाने और उनके बीच अनुशासन बनाए रखने का दावा कर सके। यह उपलब्धि केवल कुंभ के हिस्से है, जहां श्रद्धालु अपनी आत्मा की आवाज को सुनकर और विश्वास से भरकर आते हैं। कुंभ भारत की धर्मपरायण संस्कृति की उच्चता को ही प्रदर्शित नहीं करता, यह विभिन्न समुदायों के बीच धार्मिक और आध्यात्मिक संवाद की परंपरा का अग्रदूत भी है।

मार्गदर्शन करेगा कुंभ | इस बार यह

कॉमन रूम

आयोजन ऐसे समय हो रहा है, जब हमारे सामने ग्लोबल वॉर्मिंग, पर्यावरण प्रदूषण, जल संकट, आतंकवाद और अतिवाद जैसी चुनौतियां हैं। देश की सामूहिकता, सामुदायिकता, धार्मिक और आध्यात्मिक ढांचा, आस्था, परंपराएं, मूल्य और संस्कार अपनी भारतीय अस्मिता के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यही नहीं, पुरानी और नई पीढ़ी के बीच बढ़ती दूरी भी चिंता का कारण बनी हुई है। ऐसे समय में महाकुंभ निश्चित तौर पर रास्ता दिखाएगा।

सुनहरा अवसर | इस बार संगम नगरी में होने वाला आयोजन हाईटेक होगा। सीएम योगी आदित्यनाथ का मानना है कि महाकुंभ के माध्यम से भारत की सनातन संस्कृति का सम्यक साक्षात्कार करने का हमारे पास सुनहरा अवसर है। यह आयोजन केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि भारत की ग्लोबल ब्रैंडिंग का महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा। इस बार स्वच्छता, सुरक्षा और सुविधाओं के नए मानक स्थापित होने की उम्मीद है। महाकुंभ को दिव्य और भव्य बनाने के लिए इसे नया जिला ही घोषित कर दिया गया है।

सुखद संयोग | महाकुंभ भारत की महान धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संस्कृति का सामूहिक प्रकटीकरण है। यह बेहद खुशी की बात है कि महाकुंभ के दौरान ही भगवान श्रीराम के अयोध्या में निर्मित भव्य मंदिर का एक साल पूरा होगा। यह भी सुखद संयोग है कि श्रीराम का जन्मस्थान उत्तर प्रदेश में है और इस बार का महाकुंभ भी इसी प्रदेश में आयोजित हो रहा है। इसलिए प्रयागराज महाकुंभ में केवल तीन पवित्र नदियों का त्रिपक्षीय मिलन ही नहीं, दो सनातन संस्कृतियों का महासम्मिलन भी होने जा रहा है। यह कहने में कोई हिचक नहीं कि यह महाकुंभ राष्ट्र की उज्ज्वल छवि को वैश्विक स्तर तक स्वीकृति और प्रशस्ति दिलाने का शानदार अवसर साबित होगा।

(लेखक उत्तर प्रदेश बाल अधिकार संरक्षण आयोग के पूर्व अध्यक्ष हैं)